1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

देशवासियों को आर्यसमाज की ओर से
श्रीकृष्ण जन्मोत्सव एवं स्वतन्त्रता दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएँ

वर्ष 40, अंक 41 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 7 अगस्त, 2017 से रविवार 13 अगस्त, 2017
विक्रमी सम्वत् 2074 सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

श्रीकृष्ण जी का जीवन व दर्शन आज और अधिक प्रासंगिक
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की हार्दिक शुभकामनाएँ

योगेश्वर श्रीकृष्ण का सत्य स्वरूप

...जो महापुरुष संसार, मानवता, सत्य, धर्म-न्याय एवं सर्वेभवन्तु: सुखिन: के लिए जीता और मरता है उसका जन्मोत्सव सभी जन श्रद्धा, भक्ति व सम्मान से मनाते हैं। तभी महाभारतकार व्यास को ससम्मान कहना पड़ा 'कृष्ण वन्दे जगत्गुरुम्' पूरे महाभारत में सर्वाधिक, पूज्यनीय, अग्रणी, वन्दनीय हैं ।.....

– डॉ. महेश विद्यालंकार

भारत देश की विशेषता, महत्त्व आकर्षण एवं सौभाग्य रहा कि इसे ऋषि, मुनि, ज्ञानी, तपस्वी, प्रेरक महापुरुषों की विरासत व परम्परा मिली है। दिव्यात्मा, पुण्यात्मा महापुरुषों की लम्बी परम्परा में भगवान मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम और योगिराज श्रीकृष्ण का नाम बड़ी श्रद्धा, सम्मान और पूज्यभाव में लिया जाता है। अधिकांश भक्तजन इनमें दैवीय युक्त पूज्य एवं आराध्य भाव रखते हैं। उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व प्रेरक, आकर्षक, लोकोपकारक, बहु आयामी तथा चुम्बकीय था। इसी कारण लाखों हजारों वर्षों के घात-प्रतिघात वात्याचक्रों विवादों आदि के होते हुए भी वे आज भी जनमानस के हृदयों में पूजित सम्माननीय, स्मरणीय व अलौकिक महापुरुष के रूप में प्रतिष्ठित हैं। श्रीकृष्ण पुण्यात्मा, धर्मात्मा, तपस्वी, त्यागी, योगी, वेदज्ञ, निरहंकारी, कूटनीतिज्ञ, लोक उपकारक, खण्ड- खण्ड भारत को अखण्ड देखने के स्वप्नद्रष्टा आदि अनेक, गुणों व विशेषणों से विभूषित थे। वे मानवता के रक्षक, पालक और उद्धारक थे। उनके जीवन का उद्देश्य था – **परित्राणाय साधूनाम्** सत्पुरुषों व धर्मात्माओं की रक्षा हो तथा विनाशाय दुष्कृताम पापी, अपराधी तथा दुष्ट प्रकृति के लोगों का दलन हो और धर्म संस्थापनार्थ सत्य धर्म, न्याय की सर्वत्र स्थापना होनी चाहिए। इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति में उन्होंने दु:ख, कष्ट, विरोध एवं संघर्ष करते हुए सारा जीवन लगा दिया। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर न जाने कितना लिखा, पढ़ा सुना और बोला गया, फिर भी उनके जीवन और कार्यों की वास्तविक प्रमाणिक सत्य स्वरूप जानकारी हमारे से ओझल हो रही है। भागवत्, पुराणों, लोक साहित्य, कथाओं, रासलीलाओं, कृष्णलीलाओं, सीरियलों, पिक्चरों, नाटकों आदि में वे तमाशा बन रहे हैं। अधिकांश लोग और आज की युवापीढ़ी जो योगेश्वर श्रीकृष्ण का ऐतिहासिक जीवन स्वरूप मान रहे हैं। यह देश, धर्म मानवजाति एवं इतिहास के लिए दुर्भाग्य पूर्ण है।

– *शेष पृष्ठ 5 एवं 8 पर*

श्रीकृष्ण के वास्तविक स्वरूप को जन-जन तक पहुंचाने की आवश्यकता: आर्यसमाजें इस अवसर पर अधिक से अधिक लोगों तक उनके वास्तविक स्वरूप को प्रवचनों द्वारा तथा पत्रकों द्वारा पहुंचाने का कार्य करें।पत्रक सभा में उपलब्ध है तथा www.thearyasamaj.org से डाउनलोड भी किया जा है।

70वें भारतीय स्वाधीनता दिवस (15 अगस्त) पर विशेष :

राष्ट्र-ध्वज के विकास की कहानी

– *डॉ. पूर्ण सिंह डबास*

स्वतन्त्रता का मतलब स्वच्छन्दता नहीं
आओ अनुशासन में बंधकर स्वतन्त्रता दिवस उल्लासपूर्वक मनाएं

.......जानना रोचक होगा कि किसी भी देश के झंडे के रंग तथा डिजाइन मन-मर्जी से तय नहीं हुए हैं बल्कि इनके मूल में उस देश की दीर्घकालीन धार्मिक, ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक परम्पराएं होती हैं। अनेक स्थितियों में तो बहुत से परिवर्तनों के बाद ही किसी झंडे का अंतिम रूप निश्चित हो पाया है। हमारे राष्ट्र-ध्वज का वर्तमान रूप भी अनेक परिवर्तनों के बाद स्थिर हुआ है। वस्तुत: भारतीय राष्ट्र-ध्वज की विकास यात्रा काफी लंबी है जिसकी शुरूआत सन् 1857 के स्वतंत्रता संग्राम से होती है।...

झंडा या **ध्वज** कपड़े या किसी ऐसी ही चीज का प्राय: ऐसा आयताकार टुकड़ा होता है जिस पर किसी राष्ट्र, समुदाय, सैन्यबल अथवा राज्याधिकारी का प्रतीक या चिह्न अंकित हो। इसे किसी खम्भे या लट्ठे पर फहराया जाता है या डंडे पर टाँग कर साथ ले जाया जाता है। सं. में **झंडे** के लिए **ध्वज** के साथ-साथ **ध्वजा, पताका, केतु, तथा केतन** शब्द भी प्रचलित हैं। झंडे के लिए फा॰ से आए **परचम** शब्द का प्रयोग भी हिंदी में होता है जो फा॰ में ठीक झंडे के अर्थ में तो नहीं लेकिन कुछ मिलते-जुलते अर्थ में प्रयुक्त होता है। इसमें 'झंडे' वाला अर्थ उर्दू-हिंदी में विकसित हुआ है। 'झंडे' के अतिरिक्त ध्वज का एक अर्थ संस्कृत-कोशों में वह **डंडा** भी है जिस पर टांग कर झंडे को फहराया जाता है। इस डंडे के पर्याय के रूप में संस्कृत में **ध्वज-यष्टि** तथा **पताका-दण्ड** शब्दों का प्रयोग भी मिलता है। प्रश्न पैदा होता है कि **झंडा** शब्द का स्रोत क्या है। हालांकि संस्कृत में **ध्वज-दंड** शब्द का प्रयोग नहीं मिलता लेकिन भाषाविदों का विचार है कि जिस प्रकार संस्कृत में **पताका दंड** शब्द मिलता है उसी प्रकार वहां **ध्वज-दंड** शब्द भी प्रचलित रहा होगा और इसी **ध्वज दंड** से हिन्दी का **झंडा** शब्द विकसित हुआ है।

साधारण व्यक्तियों को छोड़कर; राजा, राजपद-प्राप्त अधिकारी, विशिष्ट व्यक्ति, कुल या वंश, गण तथा संस्थाएं; प्राचीन काल से ही अपनी पहचान के लिए किसी न किसी प्रतीक या चिह्न का प्रयोग करते आए हैं। ये प्रतीक आरम्भ में तो पशु, पक्षी तथा किसी फूल आदि तक सीमित थे लेकिन कालांतर में इनका विस्तार हुआ और अनेक नए प्रतीक इनमें जुड़ गए। विभिन्न रूप एवं नामधारी इन प्रतीकों में मुद्रा या मुहर, राज-मुद्रा, बिल्ला या बैज, कुल-चिह्न, फलक, पताका, वैजयंती, रण-पताका, पोत-ध्वज, ध्वजा, ध्वज तथा झंडा आदि उल्लेखनीय है। अंग्रेजी में इन प्रतीकों के लिए, इनके विभिन्न संदर्भों में उपयोग या प्रयोग के आधार पर, Seal, armours, badge, colour, ensigns, banner, standard, sheild, flag, pennon, guidons तथा streamer आदि शब्दों का प्रयोग होता है।

आधुनिकतम खोजों के आधार पर यह प्राय: निश्चित है कि ध्वज या झंडे का आविष्कार सबसे पहले भारत और चीन में हुआ। भारत में **ध्वज** तथा **ध्वजा** शब्द बहुत प्राचीन हैं जिनका प्रयोग हमारे प्राचीनतम ग्रंथ ऋग्वेद से ही मिलने लगता है। वैदिक इंडैक्स के अनुसार (देखिए **मेकडौनेल** और **कीथ** द्वारा संपादित वैदिक इंडैक्स में **ध्वज** शब्द ऋग्वेद में 'ध्वज' शब्द दो बार (7-85-2, 10-103-11) आया है। ऋग्वेद (7-85-2) से यह उद्धरण देखिए :

'स्पर्धन्ते वा उ देव हूये अत्र येषु ध्वजेषु दिद्यत: पतन्ति'

अर्थात्- ''जहाँ विजय की इच्छा करने वाले वीर स्पर्धा करते हैं, वहाँ संग्राम में

– *शेष पृष्ठ 4 पर*

वेद-स्वाध्याय

यज्ञमयी नौका

पृथक प्रायन् प्रथमा देवहूतयोऽकृण्वत श्रवस्यानि दुष्टरा।
न ये शेकुर्यज्ञियां नावमारुहमीमैंव ते न्यविशन्त केपयः।। अथर्व. 20/94/6
ऋषिः **आङ्गिरसो कृष्णः।।** देवता - **इन्द्रः।।** छन्दः **निचृज्जगती।।**

शब्दार्थ - **प्रथमाः** = जो प्रथम प्रकार के या विस्तृत ज्ञानी **देवहूतयः** = देवों अर्थात् दिव्य गुणों का आह्वान करने वाले मनुष्य होते हैं वे **पृथक्** = पृथक् ही **प्रायन्**= प्रकृष्ट मार्ग से (अपने-अपने लोकों को) पहुंचते हैं। वे **दुष्टरा** = बड़े दुस्तर **श्रवस्यानि** = ज्ञानैश्वर्यों को, श्रवणीय यशों को **अकृण्वत** =प्राप्त कर लेते हैं, परन्तु **ये** = जो **यज्ञियां नावम्** = इस यज्ञमयी नाव पर **आरुहम्** =चढ़ने में न **शेकुः** = समर्थ नहीं होते **ते** =वे **केपयः** = कुत्सित, अपवित्र आचरणवाले होकर **ईर्मा एव** = यहीं- इस लोक में **न्यविशन्त** =नीचे जाते हैं।

विनय - भाइयो! इस संसार-सागर से हमें तरा सकने वाली नौका यज्ञमयी ही है। हम यदि यज्ञकर्म नहीं करेंगे तो हम न केवल मनुष्यत्व से ऊपर नहीं उठ सकेंगे अपितु मनुष्यत्व को भी कायम नहीं रख सकेंगे, तब हमें नीचे पशुत्व में अधःपतित होना पड़ेगा। देखो, बहुत-से 'देव-हूति' पुरुष उन देवलोक, पितृलोक, ब्रह्मलोक आदि दुष्प्राप्य यशोमय उच्च लोकों को पहुंच गये हैं, बड़े भारी यत्न से इस मनुष्यावस्था को तरकर देव हो गये हैं। ये लोग यज्ञिय नाव पर चढ़कर ही वहां पहुंचे हैं। इन्होंने अपने में देवों का, दिव्यताओं का आह्वान किया है और 'प्रथम' बने हैं। दूसरी ओर वे दुर्भागे मनुष्य हैं जोकि थोड़ा-सा स्वार्थत्याग न कर सकने के कारण, अयज्ञिय हो ऋणबद्ध रहने के कारण, उस नाव का आश्रय नहीं पा सके हैं, अतः यही बंधे पड़े रह गये हैं। ये बेचारे 'केपि' = कुत्सिताचरणी लोग यहां भी नीचे धंसते जा रहे हैं, पशुत्व में गिर रहे हैं। इनका फिर पवित्र बनना अब अत्यन्त कठिन हो गया हे, अतः आओ, मनुष्य-योनि पाकर हम कुछ-न-कुछ तो स्वार्थत्याग करें, इतना यज्ञ-कर्म तो करें कि ऋणबद्ध न बने रहें। हम पर जो माता, पिता, गुरु, समाज, राष्ट्र, मनुष्यता, प्रकृतिमाता और परमेश्वर आदि के ऋण हैं, उन्हें उतारने के लिए तो अपने स्वार्थो का नित्य हवन किया करें। हम यदि इतना करेंगे, केवल परमावश्यक पंचयज्ञों को यथाशक्ति करते रहेंगे, तो भी हम इस यज्ञिय नौका पर चढ़ सकेंगे और देवयान लोकों को नहीं तो कम-से-कम पितृयाण लोकों को तो जा पहुंचेंगे, अपने मनुष्यत्व को तो नहीं खो देंगे। भाइयो! यज्ञमयी नौका खड़ी है। हम चाहें तो देवहूति होकर, दिव्यस्वभाव, धर्मशील होकर, यज्ञ-नौका द्वारा इस दुस्तर सागर को तरकर ज्ञानैश्वर्यमय उच्च-से-उच्च लोकों तक पहुंच सकते है नहीं तो फिर यदि हम इस नौका में स्थान न पा सके तो हम ऐसी खराब परिस्थिति में आ पड़ेंगे और वहां ऐसे निर्लज्ज बन जाएंगे कि हम कुत्सित, अपवित्र कर्मो के करने में ही सुख पाएंगे और नीचे-ही-नीचे गिरते जाएंगे, फिर हमारे उद्धार का दूसरा अवसर कितने काल बाद आएगा, यह कौन जानता है?

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

अब धर्म परिवर्तन के स्कूल

....मेवात मॉडल स्कूल मढ़ी में जबरन धर्मपरिवर्तन का यह मामला कोई मध्ययुगीन या पचास सौ साल पहले नहीं बल्कि आज 21वीं सदी के तेज रफ्तार से दौड़ते भारत में घटा है और सवाल उठ रहा है कि इस स्कूल में जबरन नमाज पढने के लिए बाध्य किये जाने वाले पीड़ित बच्चे वहां इतिहास, भूगोल, गणित आदि विषयों को पढने की हर माह मोटी फीस भर रहे हैं या नमाज पढने की? वहां पढने वाले बच्चे यहाँ तक बता रहे हैं कि नमाज न पढने पर उन्हें थप्पड़ तक खाने पड़ते हैं। क्या स्वतंत्र भारत में यही धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार है?.....

कहते हैं राजनीति में सही और गलत कुछ नहीं होता। लेकिन धर्म गलत सही की व्याख्या के साथ हमेशा खड़ा होता है। यूँ तो भारत की राजनीति में रोज नए धमाके होते रहते हैं। लेकिन अब यह सब धर्म में भी प्रवेश कर चुका है। मेवात मॉडल स्कूल मढ़ी (नगीना) में बच्चों को जबरन नमाज पढ़ाने और धर्म परिवर्तन कराने वाला मामला इस बात की चीख-चीखकर गवाही भी दे रहा है। मेवात मॉडल स्कूल मढ़ी के कुछ बच्चों ने उपायुक्त मनीराम शर्मा को दी शिकायत में आरोप लगाया कि पहले वह स्कूल के हॉस्टल में रहते थे। इस दौरान कुछ छात्र नमाज पढ़ने के लिए दबाव डालते थे। इतना ही नहीं मुस्लिम अध्यापक भी उन पर धर्म परिवर्तन के लिए दबाव बनाते थे। इसके लिए स्कूल के एक अध्यापक मोइनुद्दीन उनको परेशान करते थे। इतना ही नहीं छात्रों का आरोप है कि दूसरे धर्मो के प्रति उनका व्यवहार ठीक नहीं है।

दरअसल मेवात पहले हरियाणा में जिला गुड़गांव का एक भाग था। लेकिन बाद में सरकार ने जिला मेवात के नाम से अलग जिला बना दिया है जिसमें पुन्हाना, फिरोजपुर झिरका, नगीना तावडू व हथीन खंड आते हैं। आंकड़े बताते हैं 1947 में इस क्षेत्र में लगभग 30 प्रतिशत हिन्दू थे लेकिन अब घटकर 20 प्रतिशत रह गए हैं वे भी ज्यादातर कस्बों में है गांवों में तो दो-दो चार-चार ही घर रह गए है। मेवात का अल्पसंख्यक हिन्दू अनेक समस्याओं से ग्रस्त है तथा आतंकित व डरा हुआ है। कहा जाता यहां के गरीब हिन्दू परिवारों को जो गाँव में रहते है, उनको नल व कुओं से पानी न भरने देना, उनकी होली दहन, मंदिर शमशान भूमियों व खेतों पर नातायज कब्जे तथा अनेक प्रकार से तंग करके इस्लाम धर्म अपनाने के लिए बाध्य करते है। वे मजबूर होकर या तो धर्म परितर्वन कर लेते हैं या पलायन कर जाते हैं। यहां हिन्दुओं के पास आय के कोई अच्छे साधन नहीं है। कुल मिलाकर कहा जाये तो यहाँ के गांवों का हिन्दू इनकी दया पर ही निर्भर रहता है।

इसी मेवात मॉडल स्कूल मढ़ी में जबरन धर्मपरिवर्तन का यह मामला कोई मध्ययुगीन या पचास सौ साल पहले नहीं बल्कि आज 21वीं सदी के तेज रफ्तार से दौड़ते भारत में घटा है और सवाल उठ रहा है कि इस स्कूल में जबरन नमाज पढने के लिए बाध्य किये जाने वाले पीड़ित बच्चे वहां इतिहास, भूगोल, गणित आदि विषयों को पढने की हर माह मोटी फीस भर रहे हैं या नमाज पढने की? वहां पढ़ने वाले बच्चे यहाँ तक बता रहे हैं कि नमाज न पढ़ने पर उन्हें थप्पड़ तक खाने पड़ते हैं। क्या स्वतंत्र भारत में यही धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार है? आज भले ही स्कूल प्रशासन यह कहता हो कि हमने आरोपी शिक्षक निलम्बित कर दिए किन्तु एक सवाल यह भी खड़ा हो रहा है कि इस्लाम से इस मानसिकता का निलम्बन कब होगा? कब तक मोइनुद्दीन जैसे लोग इस्लाम के छत्र तले दुनिया को देखने की कोशिश करते रहेंगे?

पिछले हजारों सालों में इन्सान बदले, नाम, पहचान के साथ देश और सरहदें बदलीं। लेकिन बदलाव के इस दौर में यदि कुछ नहीं बदला वह है इस्लाम में धर्मपरिवर्तन की मजहबी मानसिकता क्यों? अरबी में एक कहावत है यदि तुम्हें मालूम नहीं है तो विद्वानों से पूछे। मुसलमान इसका अक्षरशः पालन भी करते हैं। अरबी भाषा के साथ अरब के मजहब की वकालत करने वाले उलेमा, मौलवी, मुफ्ती, काजी इत्यादि धर्माचार्य मुस्लिम समुदाय के महत्वपूर्ण व्यक्ति जिनके नियंत्रण के बाहर और अन्दर हजारों मदरसे लाखों मस्जिदों में चलने वाले छोटे-छोटे मकतब, जिनमें मुस्लिम शिशुओं की मानसिकता का निर्माण होता है इन्हीं के द्वारा चलाये जाते हैं। क्या यह बता सकते हैं कि आज के आधुनिक स्कूलों में इस्लाम को लेकर उसे अबोध बच्चों पर थोपने की यह मारामारी है तो बता दीजिये कि मदरसों में क्या सिखलाया जाता होगा? यही कि इस्लाम ही महान धर्म है शेष दुनिया पागल या फिर अधार्मिक है?

मैंने इस मामले को काफी ध्यान से पढ़ा समझा जाना मैंने एक पीड़ित बच्चे की माँ के दर्द भी सुना जो एक मोटी रकम स्कूल में झोंकने के बाद भी अपने बच्चे को मुख्यधारा की शिक्षा के बजाय सिर्फ नमाज सिखा पाई? इस इस्लामी मानसिकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन यही कहता है कि भारतीय मुस्लिम मानसिकता ने हिन्दू विरोध को मजहब का हिस्सा समझ सत्य मान लिया है। आखिर क्या कारण है मध्य युग के महाबलशाली और क्रूर सुल्तानों ने धर्म परिवर्तन की जो व्यवस्थाएं दी हैं जिनके कारण हजारों लोगों को जीवन दांव पर लगाना पड़ा था वे व्यवस्थाएं आज भी खाड़ी देशों में आतंक के नाम पर और चूँकि यहाँ इस लोकतान्त्रिक भारत में आपका वश नहीं चल रहा तो यह प्रेमजाल और स्कूलों के माध्यम से उसे जीवित रखे हुए हैं।

शायद इसी वजह से आज सारे विश्व में मुसलमानों को एक ही नजर से देखा जा रहा है। इसकी वजह भी वह खुद ही हैं। मुसलमानों की सोच यह है कि बस इस्लाम ही एक मजहब है और मुसलमान ही ईश्वर की संतान हैं। जो मौलाना मुफ्ती आज बड़े-बड़े न्यूज रूम में बैठकर कह रहे हैं कि इस्लाम जबरन धर्म परिवर्तन की आज्ञा नहीं करता क्या वह बता सकते हैं कि अरब से यहूदी, ईरान से पारसी, अफगानिस्तान से हिन्दू और बौद्ध, लाहौर से सिख, कश्मीर से हिन्दू कहाँ गये? जबकि ये इनके धार्मिक पहचान के मूल स्थान थे। फिर भी हिन्दुओं ने मुस्लिमों को स्वीकार किया। उन्हें दो राष्ट्र पाकिस्तान और बांग्लादेश दिए किसलिए? शायद इसलिए कि अब भारत शांति और सुकून से रह सके भारतीय समुदाय अपने मूल धर्म में अपनी पूजा उपासना कर सकें, इसके बाद भी जबरन धर्मपरिवर्तन कराना, मजहब के नाम पर अपनी मजहबी उपासना की प्रणाली मासूम बच्चों पर थोपना, क्यों आप लोग एकता में अनेकता और धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांतों को बलिवेदी पर चढ़ा रहे हैं?

- ***सम्पादक***

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

मुस्लिम समाज की बड़ी जनसभा औरंगाबाद में 28/07/17 को दिए गए आपत्तिजनक भाषण पर प्रतिक्रिया

स्वामी अग्निवेश के वक्तव्य पर तीक्ष्ण प्रहार करते श्री प्रकाश आर्य जी, मंत्री सार्वदेशिक सभा का ज्वलंत लेख

आर्य समाज से हिन्दुओं को दूर करने में लगे हैं स्वामी अग्निवेश

- प्रकाश आर्य

मुस्लिम अवामी कमेटी ओरंगाबाद की एक सभा में श्री अग्निवेश ने कहा-

- **लोग कहते हैं देश में रहना है तो वन्दे मातरम् कहना होगा, यदि मुझसे कोई कहे तो मैं तो वन्दे मातरम् नहीं कहूँगा।**
- **यदि सुप्रीम कोर्ट के फैसले के पहले मन्दिर बनाने की कोशिश की तो सबसे पहले मैं विरोध करूँगा।**
- **चोटी, दाड़ी के नाम पर आदित्यनाथ योगी, सारे योगी और भोगी देश को बॉट रहे हैं।**
- **यदि राम मन्दिर तोड़कर मस्जिद बनाई गई थी तो तुलसी, शिवाजी, दयानन्द, विवेकानन्द ने क्यों नहीं इसका उल्लेख किया ?**
- **क्या राम के जन्म के समय उनका जन्म आडवाणी देख रहे थे?**
- **वन्दे मातरम् के संबंध में हाई कोर्ट जजों की वन्दे मातरम् की टिप्पणी पर भी व्यंग्य किया।**

लगता है कि मुस्लिम समाज की भीड़ की तालियां बजवाना ही इस भाषण उद्देश्य मात्र था।

हमारे आर्य समाज के संन्यासी सनातन धर्म की रक्षा, उसका विस्तार और साम्प्रदायिक विचारधारा की अज्ञानता से समाज की रक्षा करने में लगे रहे और आज भी लगे हैं। धर्मान्तरण से हिन्दू समाज की रक्षा और सत्य सनातन वैदिक धर्म का प्रचार मुख्य रूप से उनका उद्देश्य रहा है। सनातन धर्म से विमुख हुए व्यक्तियों की शुद्धि करके उन्हें पुन: वैदिक धर्म में दीक्षित करना और नव आगन्तुक अन्य सम्प्रदाय के व्यक्तियों को भी जोड़ना यह कार्य भी हमारे सन्यासीवृन्दों के माध्यम से होते रहे हैं।

जब-जब सनातन धर्म विरोधी आवाज कहीं से उठी आर्य समाज सदा आगे बढ़ा और उनकी रक्षा के लिए बड़ी से बड़ी कुर्बानी दी। स्वतन्त्रता के पूर्व देश की राजनीति के क्षितिज पर पहचान बनाने वाले स्वामी श्रद्धानन्द ने कांग्रेस की मुस्लिम तुष्टिकरण के विरोध में और हिन्दू पिछड़े वर्ग की सुरक्षा के लिए उठाए कदमों का सर्वप्रथम प्रस्ताव अमृतसर के कांग्रेस अधिवेशन में रखा था। किन्तु महात्मा गांधी, पं. मोतीलाल नेहरू से भी अधिक जन-जन में प्रसिद्धी के सम्मान को हिन्दू समाज की रक्षा के लिए त्याग दिया, अपनी व्यक्तिगत मान-सम्मान की भावना को महत्व नहीं दिया, समाज व धर्म को आगे रखा।

अनेक संन्यासी मजहबी कट्टरता के विरुद्ध कार्य करते हुए बलिदानी हो गए। इसी कारण समस्त हिन्दू समाज आर्य समाज को अपना रक्षक, हितैषी मानता रहा। ऐसे अनेक वीतराग संन्यासियों ने निज स्वार्थ को कभी निकट नहीं आने दिया। संगठन के लिए जिए, संगठन के लिए कुर्बानियां देते रहे, संगठन का निज स्वार्थ में उपयोग नहीं किया।

किन्तु आज इसके विपरीत राजनीति में लिप्त और लोकेष्णा में पूरी तरह डूबे श्री अग्निवेश आर्य समाज की छबि बिगाड़ने में लगे हैं। कितनी ही बार अपने कार्य कलापों और सस्ती लोकप्रियता के वशीभूत उनके द्वारा दिए गए हिन्दू विचारधारा के विरुद्ध विवादास्पद भाषणों के कारण आर्य समाज संगठन को हिन्दू समाज का आक्रोश और उपेक्षा सहन करना पड़ी, बाद में सफाई देना पड़ी। इस प्रकार आर्य समाज से हिन्दू समाज की दूरियां बढ़ाने की हरकतें करते रहे।

आज तक कुरान पर या इस्लाम या क्रिश्चियन सम्प्रदाय द्वारा हिन्दुओं के धर्म परिवर्तन पर, चार निकाह पर, जेहाद, हज जैसी किसी बात पर अपनी जबान नहीं खोली। किन्तु हिन्दुओं के देवी देवताओं, पूजा स्थलों, त्योहारों पर टीका टिप्पणी करते हुए अनेकों बार हिन्दुओं की भावनाओं के विपरीत अपने उद्गार व्यक्त किए। इससे सनातन धर्म की विरोधी साम्प्रदायिक ताकतों को सम्बल मिला और हिन्दुओं में आर्य समाज के प्रति आक्रोश भाव आये। सत्यार्थ प्रकाश, वेद, राम मन्दिर, अमरनाथ यात्रा, समलैंगिगता, नक्सलवादियों के प्रति प्रोत्साहन देते हुए डिवेट ऐसे कई बार आर्य समाज की मान्यता के विरुद्ध बोलते रहे। कुछ साल पूर्व जम्मू कश्मीर के समस्त हिन्दू एक लम्बी लड़ाई साम्प्रदायिकता के विरुद्ध लड़ रहे थे, उस समय श्री अग्निवेश ने हिन्दू विचारधारा के विरुद्ध साम्प्रदायिक संगठनों की पीठ थप-थपाई। इस कारण हिन्दू आर्य समाज के प्रति घृणा भाव रखने लगे। जम्मू के आर्य समाजियों के सामने बड़ा संकट आ गया, उन्होंने तत्काल वहां की स्थिति बताते हुए सभा से किसी को आने को कहा तब सार्वदेशिक सभा की ओर से जाकर मीडिया में श्री अग्निवेश की बातों का खण्डन कर हिन्दू संगठन के सहयोग की बात कही। मुस्लिमों की सुरक्षा, ईसाईयों की सुरक्षा की वकालत और राष्ट्र विरोधी कार्यों में लिप्त जे. एन. यू. का समर्थन श्री अग्निवेश द्वारा अपनी लोकप्रियता बढ़ाने की भावना से किया। स्वामी रामदेव व अन्ना हजारे के आन्दोलन में उनके मंच पर बैठकर उन्हीं के विरुद्ध कार्य किया, अन्ना के विरुद्ध मंच के पीछे से ही मोबाईल पर कांग्रेस के एक बड़े नेता से अन्ना के विरुद्ध फोन पर चर्चा करते हुए टी. वी. पर लाखों ने देखा और भर्त्सना की। पंजाब में अपनी वाहवाही के लिए सारी हदें तोड़ते हुए वहां जाकर सत्यार्थ प्रकाश में से कुछ भाग निरस्त करने की बात कही।

आज तक सैकड़ों हिन्दुओं के धार्मिक स्थलों के सम्बन्ध में, काश्मीर से कनेरा, यू. पी., हरियाणा के पलायन कर चुके लाखों हिन्दुओं के लिए या जबरन सनातन धर्मियों के धर्म परिवर्तन करवाने की घटना के सम्बन्ध में कभी श्री अग्निवेश ने कुछ नहीं कहा। हिन्दुओं पर अत्याचार जब होते हैं तब कभी कुछ नहीं कहा क्योंकि सत्ताधारी या संगठन विशेष के पक्ष को प्रसन्न रखना महत्वपूर्ण था। गौ हत्यारों के पक्ष में हिन्दुओं पर निशाना साधा गया, किन्तु कभी गौ हत्या करने वालों के विरोध में एक शब्द नहीं कहा गया कि वे क्यों गौ हत्या करते हैं यह गलत है इसका कभी विरोध नहीं किया।

आर्य समाज के भले ही सैद्धान्तिक कुछ दूरियाँ हिन्दू सनातन धर्मियों से रही हों किन्तु सहयोग के लिए हमेशा आर्य समाज तैयार रहा। मीनाक्षीपुरम् में मन्दिर के अस्तित्व को साम्प्रदायिक विचारधारा वालों ने नष्ट कर दिया था। तत्कालीन सभा प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने पुन: वहां मन्दिर स्थापित करवाया। राम मन्दिर के सम्बन्ध में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के द्वारा तत्कालीन प्रधान श्री कैप्टन देवरत्न जी आर्य थे, उस समय एक सार्वदेशिक सभा सदस्यों के अतिरिक्त विशिष्ट **आमन्त्रित विद्वानों की अन्तरंग सभा में राम जन्म भूमि के आन्दोलन को सहयोग देने का निर्णय सर्वानुमति से लिया था।**

किन्तु इसके विरुद्ध दिनांक 28/07/2017 को महाराष्ट्र **मुस्लिम अवामी कमेटी ओरंगाबाद महाराष्ट्र द्वारा** एक सभा में राम मन्दिर और राम जन्म भूमि को लेकर एक बेहद निम्न स्तर की हास्यास्पद टिप्पणी श्री अग्निवेश ने हजारों मुस्लिम समुदायों के व्यक्तियों के बीच की जिसे तमाम श्रोता जो मुस्लिम समाज के ही थे बड़ी जोर से तालियां बजाकर हंसते हुए राम जन्म स्थल का मजाक उड़ाया।

भारत के वरिष्ठ एवं राष्ट्रीय स्तर में सम्मानित जन प्रतिनिधि नेता श्री आडवानी पर भी हास्यास्पद टिप्पणी की, जिसका समस्त श्रोता जो मुस्लिम ही थे उन्होंने मजाक उड़ाया, तालियां बजाई।

अपने भाषण में श्री अग्निवेश ने राम जन्म स्थल पर प्रश्न चिह्न लगाते हुए उनके जन्म के सम्बन्ध में जो भद्दी टिप्पणी की वह असहनीय व शर्मनाक है। वे कहते हैं राम का जन्म कब हुआ था किसको मालूम है, क्या प्रमाण है कि यहीं राम जन्म हुआ **जहां से नमाज पढ़ी जाती थी। पुन: कहते हैं जहां राम का जन्म हो रहा था, क्या उस समय अडवाणी (आँखों पर हाथ रख चश्में या दूरबीन से देखने का अभिनय करते हुए बताया) देख रहे थे ? आगे कहा यदि 1845 में राम मन्दिर तोड़कर मस्जिद बनाई यदि यह सही है तो तुलसी, शिवाजी, दयानन्द, विवेकानन्द ने क्यों नहीं लिखा?**

आगे कहा, ये बोलते हैं सौगन्ध राम की खाते हैं हम मन्दिर वहीं बनायेंगे। **यह हिन्दुओं की गन्दी सियासत है, मुल्क तोड़ने व बांटने की गन्दी सियासत है, हम इसे स्वीकार नहीं करते।**

इस प्रकार देश विदेश के, करोड़ों हिन्दू समाज के राम से आस्था रखने वाले व्यक्तियों की भावना का खुला मजाक मुस्लिम समाज द्वारा आयोजित एक बड़ी सभा में श्री अग्निवेश द्वारा किया गया।

लोग कहते हैं देश में रहना है तो वन्दे मातरम् कहना होगा, यदि ऐसा हो तो मैं तो वन्दे मातरम् नहीं कहूँगा। हाई कोर्ट द्वारा वन्दे मातरम् पर दिए आदेश की टिप्पणी करते हुए कहा ये जजों को कहाँ से सपना आ गया, उन्हें फैसले करना चाहिए। अपने भाषण में महाराष्ट्र के एक मुस्लिम विधायक द्वारा वन्दे मातरम् न कहने पर विवाद हो रहा है, विधायक पद निरस्त करने की माँग राष्ट्रवादी विचारधारा के व्यक्ति कर रहे हैं। किन्तु श्री अग्निवेश ने अपने भाषण में कहा जबरजस्ती कोई किसी को या यदि न्यायालय भी जबरन मुझसे वन्दे मातरम् कहने का कहे तो मैं उसे कभी नहीं मानूंगा।

आप सोच सकते हैं कि ऐसा भाषण दिया जाना खुले रूप में राष्ट्रीयता का अपमान और साम्प्रदायिकता को किस तरह से बढ़ावा देने वाला है। (जो सज्जन इन बातों की पुष्टि करना चाहें वे बीडियो से देख सकते हैं)

इस प्रकार मुस्लिम समाज द्वारा आयोजित सभा में जाकर हिन्दुओं की भावना के और राष्ट्रीय विचारधारा के विरुद्ध जब एक अपने को संन्यासी कहने वाला व्यक्ति वह भी अपने को आर्य समाजी कहे तो आर्य समाज के बारे में आम हिन्दू क्या सोचेगा? इस प्रकार के प्रयास से तो हिन्दू आर्य समाज से और दूरी बना लेगा, यह विष वमन और साम्प्रदायिक ताकतों का सहयोगी होगा, यह प्रयास श्री अग्निवेश कर रहे हैं। इस सम्बन्ध में ओरंगाबाद के तमाम हिन्दू संगठनों में रोष है और आर्य समाज के व्यक्ति किसी तरह उन्हें शान्त व आश्वस्त कर रहे हैं। संन्यासी के कर्तव्यों की अवहेलना कर और एक संन्यासी का चरित्र अपनाए बिना मात्र भगवा वस्त्र धारण करके और राजनैतिक संरक्षण से जीने वाला कोई भी जीवन संन्यासी के रूप में स्वीकार योग्य नहीं हो सकता।

अपने जीवन में वेद प्रचार, यज्ञ, संगठन शक्ति, शुद्धि, गुरुकुल का विस्तार, धर्म रक्षा का कभी कोई प्रयास नहीं किया। गौ रक्षा, सनातन संस्कृति से दूर प्राय: अनेक राजनैतिक दलों की सदस्यता समय-समय पर बदलना एक संन्यासी का आचरण नहीं है। बिहारमें जे.डी.यू. के गठबन्धन की सरकार है। **सुना है अभी-अभी फिर श्री अग्निवेश ने जे. डी. यू. की सदस्यता ग्रहण की है।** क्या एक संन्यासी का यही चरित्र होना चाहिए। आर्य समाज के कोई कार्य शेष नहीं है, कोई काम अब वेद प्रचार का नहीं बचा।

अपनी ऐसी ही ऐषणाओं के कारण

- शेष पृष्ठ 4 पर

प्रथम पृष्ठ का शेष

राष्ट्र-ध्वज के विकास की....

तीक्षण अस्त्र ध्वजों पर गिरते हैं।'' इसी प्रकार का भाव ऋग्वेद के 10 वें मंडल के, 103 वें सूक्त के 11 वें मंत्र में है। इससे स्पष्ट है कि **ध्वज** शब्द का प्रथम प्रयोग सेना के संदर्भ में हुआ है। सेनाएँ सदा अपना ध्वज लेकर चलती थीं इसी कारण सेना के लिए सं॰ में **ध्वजिनी** शब्द का प्रयोग भी होता है।

महाकाव्यों में वर्णित युद्धों में भी **ध्वज** का अत्यधिक महत्त्व पाया जाता है। उदाहरण के लिए **बाल्मीकि रामायण** (2-67-26) में उल्लेख है कि 'ध्वज' रथ पर गड़े स्तंभ में लगे होते थे। **महाभारत** (कर्ण पर्व - 33-4) में भी **वैकर्तन** कर्ण द्वारा किन्हीं की ध्वजा के टुकड़े-टुकड़े कर देने का वर्णन मिलता है। परम्परा से चले आ रहे चित्रों में, महाभारत के युद्ध में अर्जुन के रथ पर हनुमान का ध्वज लगा दिखाई देता है। प्राचीन काल के लिच्छवि, यौधेय तथा मत्स्य आदि गणों के अलग-अलग ध्वजों का उल्लेख भी मिलता है।

जैसा कि ऊपर संकेत किया जा चुका है, झंडा किसी राष्ट्र, समुदाय, सेना, गण या व्यक्ति का प्रतीक या राज-चिह्न रहा है। आरम्भ में इसका प्रयोग अधिकांशत: युद्धों के समय होता था ताकि मित्र और शत्रु को पहचाना जा सके। युद्धों में रथों और हाथियों पर तो झंडा फहराया ही जाता था, घुड़सवार भी झंडा रखते थे। झंडे का गिर जाना, झुक जाना या न दिखना पराजय का, या कम से कम अव्यवस्था या गड़बड़ी का प्रतीक आवश्य होता था। राजा के हाथी या रथ पर लगे ध्वज की रक्षा के लिए उसके आस-पास अनेक सैनिक रहते थे।

यहाँ यह जानना भी रोचक होगा कि किसी भी देश के झंडे के रंग तथा डिजाइन मन-मर्जी से तय नहीं हुए हैं बल्कि इनके मूल में उस देश की दीर्घ कालीन धार्मिक, ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक परम्पराएं होती हैं। अनेक स्थितियों में तो बहुत से परिवर्तनों के बाद ही किसी झंडे का अंतिम रूप निश्चित हो पाया है। हमारे राष्ट्र-ध्वज का वर्तमान रूप भी अनेक परिवर्तनों के बाद स्थिर हुआ है। वस्तुत: भारतीय राष्ट्र-ध्वज की विकास यात्रा काफी लंबी है जिसकी शुरूआत सन् 1857 के स्वतंत्रता संग्राम से होती है। मेरठ से आरंभ हुए इस संग्राम के क्रांतिकारियों ने दिल्ली को घेर कर नाममात्र के बादशाह, **बहादुरशाह ज़फ़र** को इस संग्राम का नेतृत्व करने को बाध्य कर दिया। बहादुरशाह ने आजादी के इस संग्राम का अनिच्छा से नेतृत्व किया और इसके प्रतीक रूप में जो झंडा उठाया वह हरे रंग का था जिसके बाएं ओर कोने में एक कमल का फूल बना था, दाएं तरफ नीचे कोने में एक चपाती बनी थी और चारों ओर स्वर्णिम झालर लगी थी। आजादी का वह संग्राम असफल रहा और बहादुरशाह को क़ैद करके रंगून (यंगून) की जेल में भेज दिया गया और इसके साथ ही वह ध्वज भी समाप्त हो गया।

जब अंग्रेज इस संग्राम में विजयी हो गए तो उन्होंने इस ब्रिटिश राज्य (भारत) के लिए एक ऐसे झंडे के निर्माण की बात सोची जो ब्रिटिश साम्राज्य का प्रतीक बन सके और जिसके साथ इस देश के सब लोग भी जुड़ सकें। इस दिशा में पहला प्रयास विलियम कोल्डस्ट्रीम (William Coldstream) नाम के इंडियन सिविल सेवा के एक ब्रिटिश अधिकारी ने किया लेकिन उसके बनाए झंडे को लॉर्ड कर्जन द्वारा अस्वीकृत कर दिया गया। आरम्भ में ऐसे झंडे के निर्माण में सुझाव देने के लिए **बाल गंगाधर तिलक, अरविन्द घोष, बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय** की भूमिका प्रमुख रही और इस पर अंकित करने के लिए **गणेश, काली (माँ)** तथा **गऊ** (माता) की आकृतियां सुझाई गई जो उस समय चल रहे धार्मिक आंदोलनों से प्रेरित थीं क्योंकि ये सभी चिह्न हिन्दू परम्पराओं पर केन्द्रित थे और देश की मुस्लिम आबादी को इन पर एतराज था, इसलिए स्वीकार नहीं किए जा सके। लेकिन राष्ट्र-ध्वज निमार्ण के ये प्रयास जारी रहे।

सन् 1905 में हिन्दू धर्म सुधारक और स्वामी विवेकानन्द की शिष्या **सिस्टर निवेदिता** ने लाल रंग का एक वर्गाकार ध्वज तैयार कराया। इसका लाल रंग स्वतंत्रता संग्राम का प्रतीक था, जिसके चारों ओर एक सौ आठ ज्योतियों या दीपकों की माला थी और बीच में देवराज इन्द्र का वज्र था। वज्र के बाएँ ओर पीले रंग में बंगला भाषा में, **वन्दे** तथा दाएँ ओर **मातरम्** लिखा हुआ था। स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान पहला तिरंगा झंडा सन् 1906 में बनाया गया। इस झंडे में एक जैसी लंबाई-चौड़ाई वाली तीन पट्टियां थीं। सबसे ऊपर हरी, बीच में पीली तथा नीचे लाल। हरे रंग की पट्टी पर कमल के आठ फूल बनाये गये थे जो अर्धविकसित थे। पीले रंग की पट्टी पर नीले रंग में, देवनागरी लिपि में, वन्देमातरम् लिखा गया था और सबसे नीचे लाल पट्टी पर सफेद रंग में बाएँ तरफ 'सूर्य' का और दाएँ तरफ 'अर्धचंद्र' का रेखाचित्र बना हुआ था। यह ध्वज पहली बार 7 अगस्त 1906 को कोलकाता के पारसी बागान स्क्वेअर् में फहराया गया और **कोलकाता-ध्वज** के रूप में प्रसिद्ध हुआ। इसी ध्वज का थोड़ा परिवर्तित रूप **मादाम भीकाजी रुस्तम कामा** ने विदेश में तैयार करवाया। इसमें और कोलकाता ध्वज में केवल इतना अन्तर था कि कोलकाता ध्वज में जहाँ अर्धविकसित कमल बने थे वहाँ इसके कमल विकसित थे। कोलकाता ध्वज में **सूर्य** और **अर्धचंद्र** के स्कैच या रेखाचित्र बने थे जबकि इसमें चित्र थे। यह झंडा सर्वप्रथम 22 अगस्त 1907 को जर्मनी के **स्टुटगार्ट नगर** में **मादाम कामा** के द्वारा ही फहराया गया। इसी क्रम में सन् **1916** में मच्छिलीपट्टणम के एक किसान **पिंगली वैंकैया** ने मद्रास हाई कोर्ट के सदस्यों के आर्थिक सहयोग से झंडे के **तीस** नए डिजाइन पेश किए जो एक पुस्तिका के रूप में थे। इनमें से कोई भी स्वीकार नहीं किया जा सका लेकिन इसने इतनी भूमिका जरूर निभाई कि **ध्वज आंदोलन** को जारी रखा। स्वाधीनता संघर्ष के अगले पड़ाव के रूप में, सन 1917 में होमरूल लीग के नेता **बाल गंगाधर तिलक** और **श्रीमती एनी बेसेन्ट** ने एक नये झंडे की रूपरेखा तैयार करवायी। इसमें लाल और हरी के क्रम से नौ पट्टियाँ थी, पाँच लाल और चार हरी। नीचे की छ: पट्टियों में फैला हुआ सप्तर्षि या सात तारों का समूह अंकित था और ऊपर की तीन पट्टियों के दाएँ ओर एक अर्धचंद्र, और इसके ऊपर एक तारा बना हुआ था। झंडे के बाई ओर, ऊपर के कोने में ब्रिटिश सत्ता का प्रतिनिधित्व करता हुआ **यूनियन जैक** बना हुआ था। होमरूल लीग का यह झंडा भी प्रचलित नहीं हो सका क्योंकि इस पर कोयम्बटूर के मजिस्ट्रेट ने पाबंदी लगा दी। इस पाबंदी से राष्ट्रीय ध्वज की महत्ता और आवश्यकता पर बहस और भी तेज हो गई।

1921 में महात्मा गांधी ने अपने पत्र 'यंग इंडिया' में भारतीय ध्वज की आवश्यकता पर जोर देते हुए इसका खाका सुझाया, जिसके केन्द्र में चरखा (जिसका विचार मूलत: लाला हंसराज ने दिया था) हो, हिन्दुओं को दर्शाने वाली लाल पट्टी हो और मुसलमानों की प्रतीक हरी पट्टी हो। उन्होंने ऐसा एक झंडा तैयार करने का काम **पिंगली वैंकैया** को ही सौंपा था। लेकिन इस झंडे का सिक्खों तथा अन्य धर्मों द्वारा विरोध हुआ और 1929 में एक अधिक धर्मनिर्पेक्ष रूप तैयार किया गया। सन् 1931 में एक फ्लैग कमेटी बनाई गई और इसने एक ध्वज का प्रारूप तैयार किया। इसके अतिरिक्त 1931 में ही इंडियन नेशनल कांग्रेस का चरखे वाला झंडा बनाया गया। यह कहानी चलती रही और अंतत: इंडियन नेशनल कांग्रेस के ध्वज के आधार पर चरखे के स्थान पर अशोक चक्र वाले, ध्वज का प्रारूप तैयार किया गया। उसी प्रारूप को पं॰ जवाहर लाल नेहरू ने **22 जुलाई 1947** को संविधान सभा में पेश किया। इस प्रारूप को संविधान सभा ने स्वीकृति प्रदान की और तभी से यह हमारा राष्ट्र-ध्वज बन गया।

संसार भर के ध्वजों के ऐसे विकास क्रमों और उनके लम्बे इतिहास को देखते हुए अब तो ध्वजों या पताकाओं के तर्कपूर्ण अध्ययन पर आधारित ज्ञान की एक शाखा भी विकसित हो गई जिसे **वैक्सिलॉलॉजी** (vexillology) कहा जाता है। यह शब्द लैटिन भाषा के दो शब्दों vexillum (= ध्वज, ध्वजा, पताका) तथा logy (=शास्त्र, विद्या) के योग से बना है। हिन्दी में इसे **ध्वज शास्त्र** या **ध्वज विज्ञान** कहा जा सकता है।

- संपर्क : 9818211771

पृष्ठ 3 का शेष

श्री अग्निवेश द्वारा आर्य समाज के संगठन को भी नहीं छोड़ा। सार्वदेशिक सभा दिल्ली कार्यालय पर बलात अवैधानिक खुली दादागिरी से कब्जा कर तात्कालीन शासन प्रशासन के सहयोग से जो क्षति पहुंचाई वह अपूर्णीय व अकथनीय है। राजनैतिक पार्टियों जैसा षड़यन्त्र और विचारधारा के वशीभूत संगठन को तोड़ने का कार्य किया। स्वनिर्मित तथाकथित पद पर वे चाहे जब आ जाते हैं, या चाहे जब किसी और को आगे करके अपनी योजना चलाते रहे। जब पूरे देश के आर्यो ने नकार दिया तो फिर पीछे हटकर किसी को आगे कर दिया, यह एक सोची समझी योजना के अन्तर्गत चल रहा है।

मेरे आर्य बन्धुओं, **आर्य समाज की स्थिति हमसे छिपी नहीं है उसका कारण है हम ऋषि को मानते हैं पर बातों तक सच्चे मन से उसकी नहीं मानते,** उसका चित्र लगाते हैं, संस्थाओं के नाम भी रखते हैं, नाम का जयकारा भी लगाते हैं। यह सब पौराणिकों के समान चित्र पूजा और चरित्र उपेक्षा के समान हो रहा है। ऋषि के जीवन में सत्य ही था निर्भिकता थी किन्तु हम उसके अनुयायी उसके विपरीत सही को सही कहना भूल गए, सत्य और असत्य को समान दर्जा भी हम कहीं-कहीं औप-चारिकता और व्यवहारों की मधुरता को सामने रखकर दे रहे हैं। त्यागी व लोभी को, स्वार्थी और परमार्थी को, एक ही तराजू में तौल रहे हैं। गलतियों को क्षमा करने की भूल पृथ्वीराज ने की थी, जिसका खामियाजा हम अब भुगत रहे हैं, किन्तु हम भी उसी को दोहरा रहे हैं। सत्य का त्याग व चापलूसी अथवा कपड़ों के रंगों से भ्रमित होते रहे तो अपने को आर्य कहना इस शब्द की गरिमा को नष्ट करता है। याद रहे चुप रहना सत्यता को नष्ट करता है।

समाज के लिए जो समर्पित हैं उनको स्थान देना हम सबका नैतिक कर्तव्य है। किन्तु जो संगठन के साथ खेल रहा हो, भ्रमित कर रहा हो, लोकेष्णा के कारण संगठन का अहित कर रहा हो उसको यदि नहीं समझा, उसको भी संगठन में स्थान देते रहे तो संगठन के लिए इससे बड़ा धोखा नहीं हो सकता है, हमारा नियम कहता है- **यथायोग्य वर्तना चाहिए,** यह महर्षि दयानन्द ने एक सन्देश दिया उसको ही मान लेवें तो संगठन की विकृति दूर हो जावेगी।

आर्यसमाज औरंगाबाद एवं महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से औरंगाबाद में दिए गए स्वामी अग्निवेश के भाषण दिनांक 28/7/2017 की जानकारी हमें दी गई, जिसको सुनकर यह लगा कि इसके सम्बन्ध में आर्यसमाज का पक्ष जनता के सामने जाना बहुत जरूरी है। यह लेख हम प्रसन्नता से नहीं लिख रहे। जब बृहद समाज के लोग इस सम्बन्ध में हमारे सामने प्रश्न खड़ा करते है तो आर्यसमाज का पक्ष रखते हुए हमें बार-बार यह दोहराना पड़ता है कि स्वामी अग्निवेश का वक्तव्य किसी हालात मे भी आर्यसमाज का मन्तव्य नहीं हो सकता। अत: यह लेख यहां आप सब पाठकों की जानकारी हेतु प्रस्तुत किया जा रहा है।

- सभामन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

प्रथम पृष्ठ का शेष

संसार के इतिहास में श्रीकृष्ण जैसा निराला, विलक्षण, अद्‌भुत, अद्वितीय विश्वबन्धुत्व, महापुरुष न मिलेगा। यदि किसी महापुरुष में वेद, दर्शन, योग, आध्यात्म, इतिहास साहित्य, संगीत, कला, राजनीति, कूटनीति आदि सभी एकत्र देखने हैं तो वह अकेले देवपुरुष श्रीकृष्ण हैं। सत्य ये है कि दुनिया के नादान लोगों ने उस योगीराज श्रीकृष्ण का भेद नहीं जाना। जिनका जन्म जेल में हुआ। जन्म से पहले ही मृत्यु के वारन्ट निकल गए। कैसी विचित्र बिडम्बना रही जब जन्म हुआ उस समय उनके पास कोई खुशी मनाने वाला, बधाई देने वाला और मिठाई बांटने वाला नहीं था। ऐसे ही मृत्यु के समय भी उनके पास कोई रोने वाला नहीं था। विमाता यशोदा की गोद में पले, विपरीत परिस्थिति के करण मामा को मारना पड़ा। राज्य छोड़कर द्वारिका असमय में जाना पड़ा। सत्य-न्याय, धर्म और मानवता की रक्षा के लिए नाना रूप धारण करने पड़े। कई प्रकार की भूमिकाएं निभाई। कई बार अपमान, विरोध व संघर्ष का जहर पीना पड़ा। सम्पूर्ण जीवन कष्ट, संघर्ष, विवादों मुसीबतों का अजायबघर रहा। ऐसे विरोधाभास में रहते, जीते जीवन में कभी निराश, हताश, उदास एवं दु:खी नजर नहीं आए। यही उनके जीवन की समरसता एवं महापुरुषत्व है। उनके जीवन से ऐसी शिक्षा एवं प्रेरणाएं लेनी चाहिए। महाभारत में अनेक विशेषताओं से युक्त अनेक महापुरुष हुए मगर सभी का जन्म दिन नहीं मनाया जाता है। हजारों वर्षो के बाद बिना सूचना, पत्रक, विज्ञापन आदि के श्रीकृष्ण का जन्म दिन सबको याद है। बड़ी धूमधाम के साथ सजावट-बनावट के साथ पूज्य भावना से जन्मोत्सव मनाया जाता है। जो महापुरुष संसार, मानवता, सत्य, धर्म-न्याय एवं सर्वेभवन्तु: सुखिन: के लिए जीता और मरता है उसका जन्मोत्वस सभी जन श्रद्धा, भक्ति व सम्मान से मनाते हैं तभी महाभारतकार व्यास को ससम्मान कहना पड़ा 'कृष्ण वन्दे जगत्‌गुरुम्' पूरे महाभारत में सर्वाधिक, पूज्यनीय, अग्रणी, वन्दनीय हैं तो श्रीकृष्ण को माना गया है। श्रीकृष्ण का असली स्वरूप और चरित्र महाभारत में ही मिलता है। सम्पूर्ण महाभारत में तटस्थ रहते हुए भी सत्य, न्याय-धर्म के लिए अहंभूमिका निभाते हैं। वहां वे राष्ट्रनायक के रूप में दिखाई देते हैं तभी द्रोणाचार्य को कहना पड़ा-

यतो धर्मस्तत: कृष्ण: यत: कृष्णस्ततो जय:

जहां धर्म है वहां श्रीकृष्ण हैं और जहां श्रीकृष्ण हैं वहां निश्चय विजय होगी। महाभारत में श्रीकृष्ण ने अपनी भूमिका बड़ी कुशलता निपुणता, कूटनीति एवं सक्रियता से निभाई। संसार उनके कर्म कौशल के आगे नतमस्तक है।

अपने इतिहास, संस्कृति, धर्मग्रन्थों, महापुरुषों आदि को विकृत, कलंकित पतित एवं छेड़खानी करने वाली संसार में जाति है तो वह हिन्दू हैं। जिसने अपने इतिहास, पूर्वजों महापुरुषों के सत्य यथार्थ स्वरूप को समझा, जाना, माना और अपनाया नहीं है। जैसा आज योगीराज भगवान श्रीकृष्ण का अश्लील, भोगी, विलासी, लम्पट, पनघट पर गोपिकाओं को छोड़ने वाला आदि दिखाया, सुनाया पढ़ाया तथा बताया जा रहा है। वैसा सच्चे अर्थ में उनका प्रमाणिक जीवन चरित्र नहीं था। उन्हें चोर जार शिरोमणि, माखन चोर आदि कहकर/लांछन लगाये गए। मीडिया श्रीकृष्ण के नाम पर अश्लीलता, श्रृंगार, वासना, कामुकता, ग्लैमर अन्ध विश्वास, पाखण्ड आदि दिखा, सुना और फैला रहा है। आज की पीढ़ी इन्हीं बातों को सच व ऐतिहासिक मान रही है। कोई रोकने, टोकने व कहने वाला नहीं है। एक आर्य समाज है जो सत्य को सत्य और गलत को गलत कहने वाला था, वह आज

स्वयं अपने में उलझा पड़ा है। उसकी आवाज में वह तीक्ष्णता और पैनापन नहीं रहा। इसीलिए तेजी से ढ़ोंग, पाखण्ड, अन्धश्रद्धा, अन्धविश्वास, गुरुडम आदि फैल रहा है। महापुरुषों की परम्परा में किसी को योगीराज की उपाधि, सम्मान, पहिचान एवं पूज्यभाव मिला है तो वे श्रीकृष्ण हैं। वास्तव में श्रीकृष्ण का गुण, कर्म स्वभाव आचरण, जीवन दर्शन चरित्र ऐसा नहीं था जो आज मिलता है। असली उनका चरित्र महाभारत में है जहां वे सर्वमान्य, सर्वपूज्य, योगी, उपदेशक, मार्ग दर्शन, विश्वबन्धुत्त्व, नीतिनिपुण, सत्य न्याय, धर्म के पक्षधर के रूप में दिखाई देते हैं। जब वर्तमान में प्रदर्शित जीवन चरित्र की तुलना महाभारत के श्रीकृष्ण से करते हैं। तो रोना आता है। गीता जैसा अमूल्य ग्रन्थ महाभारत का ही अंग है। विश्व में धर्म व आध्यात्म के क्षेत्र में ज्ञान भारत को गीता से मिला और सम्मान व पहिचान बनी। गीता में श्रीकृष्ण ने जो जीवन जगत के लिए अमर उपदेश व सन्देश दिए हैं वे युगों-युगों तक जीवित-जागृत रहेंगे। गीता भागने का नहीं जागने की दृष्टि विचार एवं चिन्तन देती है। जीवन-जगत में रहते हुए, निष्काम करते हुए जीवन के चरम लक्ष्य मोक्ष तक पहुंचने का गीता दिव्य सन्देश देती है। गीता में ज्ञान-विवेक वैराग्य पूर्ण श्रीकृष्ण योगी के रूप में सामने आते हैं। जैसे कोई हिमायल की चोटी पर खड़ा योगी आत्मा-परमात्मा, जीवन-मृत्यु, भोग, योग, ज्ञान, कर्म, भक्ति आदि का चिन्तन प्रेरणा व सन्देश दे रहा हो। तत्वज्ञ पाठकगण सोचें-विचारें और समझें- कहां गीता के श्रीकृष्ण और पुराणों कथाओं कल्पित कहानियों के श्रीकृष्ण हैं? हमने उन्हें क्या से क्या बना दिया है। अमृत से निकालकर उन्हें कीचड़ में डाल रहे हैं? महाभारत और गीता के श्रीकृष्ण को भूलकर, छोड़कर आज समाज पुराणों व रसीली कथाओं के श्रीकृष्ण के चरित्र को पकड़ रहे हैं। संसार का दुर्भाग्य है कि श्रीकृष्ण के सत्यस्वरूप, जीवनादर्शन के साथ अन्याय व धोखा हो रहा है। पुराणों में श्रीकृष्ण को युवा व वृद्ध होने ही नहीं दिया, बाल लीलाओं में उनका सम्पूर्ण जीवन अंकित व चित्रित होकर रह गया। जिन्होंने कभी भीख नहीं मांगी थी। आज हम उनके चित्र व नाम पर धन बटोर व भीख मांग रहे हैं? किसी विदेशी चिन्तक ने श्रीकृष्ण के वर्तमान स्वरूप को देखकर टिप्पणी की थी यदि भारत में सबसे अधिक अन्याय व अत्याचार किया है तो वह अपने महापुरुषों के चरित्र के साथ किया है उनके असली स्वरूप को भुलाकर विकृत व कलंकित रूप में उन्हें दिखा रहे हैं। इतिहास हमें कभी माफ नहीं करेगा। ऋषि दयानन्द से बढ़कर सत्य वक्ता और प्रमाणिक कौन हो सकता है। उन्होंने श्रीकृष्ण के उज्जवल व प्रेरक चरित्र की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है ''देखो। श्रीकृष्ण का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है। श्रीकृष्ण ने जन्म से लेकर मरण पर्यन्त बुरा काम कुछी भी किया हो ऐसा कहीं भी नहीं लिखा है।''

महाभारत में राधा का कहीं नाम नहीं आता है। किन्तु राधा के नाम बिना श्रीकृष्ण की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। राधा यशोदा के भाई रावण की पत्नी थी। पुराणों, लोक कथाओं, कहानियों साहित्य आदि में श्रीकृष्ण के चरित्र को कलंकित व विकृत, बदनाम करने के लिए राधा का नाम जोड़ा गया। इतिहास में मिलावट की गई। लोगों को नैतिक, धार्मिक जीवन मूल्यों से पथभ्रष्ट करने के लिए श्रीकृष्ण और राधा के नाम पर अश्लीलता व श्रृंगारिक कूड़ा-करकट इकट्ठा कर लिया गया। जो आज फल-फूल रहा है। श्रीकृष्ण पत्नीव्रत थे उनकी धर्म पत्नी रुक्मिणी थीं। श्रीकृष्ण के जीवन वृत्त में तो रुक्मिणी का नाम आता है मगर व्यावहारिक रूप में मंदिरों, लीलाओं, कथाओं, झांकियों आदि में रुक्मिणी को श्रीकृष्ण के साथ

- शेष पृष्ठ 8 पर

श्री कृष्ण चन्द्र के गुण गाओ

युग नायक श्री कृष्ण चन्द्र के, सब नर-नारी गुण गाओ।
ईश्वर के सच्चे भक्त बनो, पावन वैदिक पथ अपनाओ।।

अन्याय बढ़ा था धरती पर, जब चारों ओर अंधेरा था।
सब भूल गए थे, धर्म-कर्म, दानव दल का तब फेरा था।।
साधु सन्त थे आतंकित, दुष्टों ने डाला डेरा था।
ज्ञानी-ध्यानी अपमानित थे, गुण्डों का यहां बसेरा था।।

इतिहास पुराना याद करो, विद्वान बनो तुम सुख पाओ।
ईश्वर के सच्चे भक्त बनो, पावन वैदिक पथ अपनाओ।।

वेद सभ्यता-सदाचार को, भूल गए थे नर-नारी।
खाओ-पिओ, मौज उड़ाओ, कहते थे भ्रष्टाचारी।।
छीना-झपटी मची हुई थी, व्याकुल थी जनता सारी।
देवों के इस आर्यवर्त में, गउएं जाती थीं मारी।।

भारत की थी दुर्दशा बहु, तुम समझो जग को समझाओ।
ईश्वर के सच्चे भक्त बनो, पावन वैदिक पथ अपनाओ।।

जरासंध, शिशुपाल यहां, निशदिन करते थे शैतानी।
दुर्योधन, कंस दुराचारी, पापी करते थे मन मानी।।
भीष्म द्रोण अरु कृपाचार्य, दिखा रहे थे नादानी।
तिरस्कृत होते थे ईश्वर-भक्त विदुर जैसे ज्ञानी।।

पढ़ो महाभारत को मित्रों! उच्चे शिखर पर चढ़ जाओ।
ईश्वर के सच्चे भक्त बनो, पावन वैदिक पथ अपनाओ।।

ईश्वर ने भारी कृपा की, श्री कृष्ण पधारे भारत में।
वेद विरोधी दुष्ट सभी, केशव ने मारे भारत में।।
शिशुपाल, कंस, अरु शाल्वदैत्य, सब रिपु संहारे भारत में।
श्री कृष्ण चन्द्र ने धर्मीजन, सब पार उतारे भारत में।।

भारत के नव युवको जागो, मत इधर-उधर धक्के खाओ।
ईश्वर के सच्चे भक्त बनो, पावन वैदिक पथ अपनाओ।।

उग्रवाद-आतंकवाद का, भारत में है जोर सुनो।
देशद्रोही धूर्त कुकर्मी मचा रहे हैं शोर सुनो।।
लो चक्र सुदर्शन हाथों में, तुम दुष्टों का संहार करो।
श्री कृष्ण चन्द्र बन जाओ तुम, प्यारे भारत के कष्ट हरो।।

कहता है ''नन्दलाल निर्भय'' कर्त्तव्य निभाओ, योद्धाओ।
ईश्वर के सच्चे भक्त बनो, पावन वैदिक पथ अपनाओ।।

- पं. नन्दलाल निर्भय, सिद्धान्ताचार्य कविरत्न

Veda Prarthana

Dear Supreme Father, Be Easily Available to Us for Guidance

- Acharya Gyaneshwarya

स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव।
सचस्वा नः स्वस्तये।।

Sa na piteva sunwe agne soopayano bhava. Sachasva nah swastaye.

(Rig Veda 1:1:9 Yajur Veda 3:24)

Sa He, God agne Supreme Light and our Ultimate Leader, piteva sunwe just as a father is easily available to his son, soopayano bhava na be easily available to us for guidance. Sachasva nah swastaye inspire us and be our Companion for our benevolence.

Dear God, You are our Supreme Father and like a good caring biological father protects his children, You are our Protector and Guide in life, Dear God, You are Agne-the Supreme Light that exists everywhere in the universe including inside our soul and You constantly teach, enlighten, inspire, guide and lead us to follow truth and virtue in life. Dear God, guide and direct us to such a path so that we (our souls) can easily realize You and directly learn and gain knowledge as well as wisdom from You. With this experience may our mind become full of virtuous thoughts and generosity towards others. Thus inspired may we perform such virtuous actions that promote the welfare of both an individual and his/her family as well as our society and the nation.

In the world, the male biologic person who is the cause of our birth as well as who protects and nurtures us (or at least is supposed to) is called our father. Similarly, all male persons who protect and nurture us in life are also worthy of being called our fathers and this includes our grandparents, relatives such as uncles, teachers and learned mentors. Dear God, however, You the Creator, Protector, Maintainer, Nurturer and Administrator of the whole universe are the Father of all fathers, You have been our Supreme Father since eternity.

Dear God, You are Agne-the Supreme Light that exists everywhere in the universe including inside our soul and You constantly enlighten, inspire, guide and lead us to follow truth and virtue. You are our Ultimate Leader. Dear God, You are our Supreme Father. You are our Supreme Protector and Guide in life like a human father protects and nurtures his children. Some biological fathers due to ignorance, selfishness or greed at times teach their children to lie, cheat, be unjust or cruel and misguide them to do sinful things for an apparent transient physical gains in life. Dear God, such faults, however, never apply to You because You are always thinking of our true welfare and never guide us in the wrong direction for momentary gains. Instead, whenever, we even have a desire in our mind to do something wrong or sinful such as lying, stealing, hate etc, You create in our mind doubt, shame or fear and an aversion in us toward such thoughts and behavior, advising us to change our course towards the right path. Also, whenever we plan and/or execute something good You inspire our soul and mind with encouragement, fearlessness and joy.

O Omnipresent God and Inspirer to our soul, there are many occasions when our biological fathers see us suffering physically or mentally but feel helpless in being able to assist us. They stand still immobile like a statue with limp hands and a bent head unable to help us even though they watch and observe us with wide open eyes. Some other parents even purposely ignore their children under similar circumstances because they do not want to get involved for the pain and unhappiness it may cause themselves. Dear God, there are occasionally such disgusting incidents where biological fathers for the sake of their financial security or pseudo-honor disown their children and leave them in the clutches of death and rarely even facilitate their children's suffering and/or death. Similarly, although teachers, policemen (women), lawyers, judges, physicians etc like our biologic parents are supposed to protect us, at times they become our exploiters. Dear God, even in such circumstances, You are our Supreme Father, Protector and Guide; please inspire our soul and mind and give us strength and courage so that we do not deviate from the truth or the right path and are able to overcome our fears and suffering.

Dear God, whatever nurturing our real parents as well as other surrogates do for our welfare, it is because You have granted them wisdom and resources to succeed. They have learnt their virtuous values directly or indirectly from the teachings of the Vedas, otherwise without Your help they are incapable of providing us any nurturing. O our Eternal Father! Our laukik fathers i.e. biologic parents, elders and guardians at times are able to guide us correctly and fulfill our deserving wishes but at other times they fail to meet their proper responsibilities. Our Supreme Father, however, You always, every moment of our life are our soul's Constant Companion and as such inspire, guide, help and nurture us so that we may not go astray.

Dear God, this is our humble prayer to You that just as virtuous parents and teachers protect, guide and nurture young children, similarly may You also be easily avilable to us, protect and inspire us to live a virtuous life. Fill up our hearts and mind with enthusiasm, courage and strength so that we may have high ideals in our personal lives as well as doing good to others. May we feeling secure under Your shelter spend our life for the welfare and uplift of others, the nation and the world. Dear God You are Supreme Light and Our Ultimate Father, may You always inspire us to do our part to fulfill this prayer.

(For God's attributes, also see mantras # 1,2,5,8,20,28,30,31)

To be continued

प्रेरक प्रसंग

जब मुंशीराम जी ने प्रतिज्ञा की

जब गुरुकुल की स्थापना का आर्य समाज में विचार बना तो आर्यसमाज लाहौर के उत्सव पर बड़ी कठिनाई से इस कार्य के लिए दो सहस्त्र रुपये दान इकट्‌ठा हुआ। इस कठिनाई को दूर करने के लिए मुंशीराम जी (स्वामी श्रद्धानन्दजी) ने यह प्रतिज्ञा की कि जब तक गुरुकुल के लिए तीस सहस्त्र रुपये इकट्‌ठे नहीं कर लूँगा तब तक मैं अपने घर में पग नहीं धरूँगा। सब जानते हैं कि आपने यह प्रतिज्ञा पूरी करके दिखाई।

आपने इस प्रतिज्ञा को किस शान से निभाया, इसका पता इस बात से चलता है कि उन दिनों जब कभी आप जालन्धर से निकलकर कहीं जाते तो आपके बच्चे आपको जालन्धर स्टेशन पर ही आकर मिला करते थे। आप अपने घर पर पग नहीं धरते थे।

और जब प्रतिज्ञा पूरी करके आप लाहौर आये तो वहाँ एक बड़ी विशाल सभा का आयोजन हुआ। तब आपके गले में लाला कांशीराम वैद्यजी द्वारा तैयार की गई कपूर की माला डाली गई।

साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : **पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

आओ ! संस्कृत सीखें | संस्कृत पाठ - 27 (ब) | छन्द रचना

गतांक से आगे....

मम मातृभूमिः भारतं धनधान्यपूर्ण स्यात् सदा ।
नग्नो न क्षुधितो कोऽपि स्यादिह वर्धतां सुख-सन्ततिः ।
स्युर्ज्र्गिनिनो गुणशालिनो ह्युपकार-निरता मानवः,
अपकारकर्ता कोऽपि न स्याद् दुष्ट वृत्तिर्दावः।।

इस छन्द की भी प्रथम पंक्ति में मात्राचिह्न लगा दिए हैं । शेष पर स्वयं लगाइए ।

गीतिका : इस छन्द में प्रत्येक चरण में छब्बीस मात्राएँ होती हैं और 14 तथा 12 मात्राओं के बाद यति होती है ।

जैसे :-

ऽ । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ ऽ । ऽ
हे दयामय दीनबन्धो, प्रार्थना मे श्रूयतां
यच्च दुरितं दीनबन्धो, पूर्णतो व्यपनीयताम्।
चञ्चिलानि मम चेन्द्रियाणि, मानसं मे पूयतां
शरणं याचेऽहं सदा हि, सेवकोऽस्म्यनु गृह्यताम्।

ऊपर पहले चरण पर मात्रा-चिह्न लगा दिए हैं । इसी प्रकार सारे चरणों में आप चिह्न लगा कर मात्राओं की गणना कर सकते हैं ।

- क्रमशः -

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय
मो. 9899875130

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा
समस्त विद्यालयों/आर्य शिक्षण संस्थाओं हेतु प्रकाशित

नैतिक शिक्षा की पुस्तकें

नर्सरी से 12वीं कक्षा तक

आकर्षक छूट 25%

बेहतरीन कागज पर आकर्षक छपाई में तैयार कराई गई नैतिक शिक्षा की पुस्तकें छात्रों के नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक ज्ञान तथा राष्ट्रीय भावना जागृत करने वाली हैं। ये पुस्तकें दिल्ली के समस्त विद्यालयों/शिक्षण संस्थाओं के साथ-साथ दिल्ली से बाहर अन्य प्रदेशों के विद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी नर्सरी से कक्षा 12वीं तक लागू हैं। अपने विद्यालय/शिक्षण संस्था के लिए आवश्यकतानुसार मंगवाने के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001
☎ : 23360150, 9540040339; Email : aryasabha@yahoo.com

वार्षिकोत्सव एवं स्वतंत्रता दिवस समारोह

आर्य समाज चन्द्र नगर 15 अगस्त 2017 प्रात: 9 से दोपहर 2.30 बजे के बीच को समुदाय भवन चन्द्रनगर अपने वार्षिकोत्सव के अवसर पर राष्ट्र रक्षा यज्ञ एवं मधुर भजन व देश भक्ति गीतों का आयोजित किया जा है। -***सोमनाथ, मंत्री***

रक्षाबन्धन एवं जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में वेद कथा

आर्य समाज लाजपत नगर श्रावणी उपाकर्म, रक्षाबन्धन एवं जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में वेद कथा 8 से 12 अगस्त के बीच आयोजित किया जा रहा है। जिसके अन्तर्गत यजुर्वेद यज्ञ, भजन, प्रवचन का कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा।

-***सुरेन्द्र शास्त्री, मंत्री***

गीता ज्ञान कथा

आर्य समाज मन्दिर, अशोक विहार फेज-1, दिल्ली के तत्वावधान में गीता ज्ञान कथा, आचार्य अखिलेश्वर जी भारद्वाज अध्यक्ष, वैदिक योग आश्रम आनन्दधाम(हरिद्वार) के सानिध्य में 12 से 15 अगस्त के बीच आयोजित की जा रही है। कार्यक्रम के अन्तर्गत, बच्चों की भाषण प्रतियोगिता एवं संगीत का कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा।

-***जीवन लाल आर्य, मंत्री***

श्रावणी पर्व एवं वेद प्रचार

आर्य समाज मन्दिर महर्षि दयानन्द मार्ग सराफा, आकोट जिला अकोला (महा) में श्रावणी पर्व एवं वेद प्रचार सप्ताह 7 से 21 अगस्त 2017 तक विभिन्न ग्रामों में भव्य वेद प्रचार, वेद प्रचार सप्ताह के रूप में आयोजित किया जाएगा। - ***आर्य संतोष कुमार राऊत***

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज डी ब्लाक, विकासपुरी, नई दिल्ली-18

प्रधान - श्री हरीश कालरा
मन्त्री - श्री ज्योत भूषण ओबरॉय
कोषाध्यक्ष - श्री ओम प्रकाश घई

आर्यसमाज इन्द्रपुरी, नई दिल्ली-12

प्रधान - श्री नरेश चन्द्र वर्मा
मन्त्री - श्री राजेन्द्र नन्दा
कोषाध्यक्ष - श्री राजकुमार चांदना

विज्ञापन

वरिष्ठ नागरिकों के लिए शुभ सूचना

आयुधाम सोसायटी सीनियर सीटिजन होम जो पिछले 25 वर्षों से वृद्ध लोगों के लिये सेवा का कार्य कर रही है। आयुधाम सोसाईटी में नवीन भवन निर्माण के माध्यम से वरिष्ठ नागरिकों के लिए आवासीय सुविधा का विस्तार किया गया है। आप सभी से अनुरोध है कि वरिष्ठ नागरिकों को रहने की जरूरत महसूस हो तो आप उन्हें यहां पर आने की प्रेरणा दें। अगर आप या आप के साथियों को भी रहने की आवश्यकता हो तो आपका भी स्वागत है। सम्पर्क करें:-

अशोक आनन्द : 9654783140
आर.पी. रहेजा : 9717054558

संगठन की सुदृढ़ता एवं विस्तार सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण विषयों पर उत्तर-पश्चिम दिल्ली की आर्यसमाजों की क्षेत्रीय गोष्ठी का आयोजन

आप सभी को विदित ही है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा दिल्ली स्थित आर्यसमाजों की क्षेत्रिय गोष्ठियों का आयोजन किया जा रहा है। इसके अन्तर्गत पूर्वी दिल्ली, पश्चिम दिल्ली, उत्तरी दिल्ली, दक्षिण दिल्ली की महत्त्वपूर्ण गोष्ठियां सम्पन्न हो चुकी हैं। उत्तर पश्चिमी दिल्ली आर्यसमाजों की गोष्ठी 20 अगस्त को आर्यसमाज प्रशान्त विहार में समाज के प्रधान श्री कृष्णचन्द्र पाहुजा जी की अध्यक्षता में आयोजित की जा रही है। आपसे निवेदन है कि आप अपनी आर्यसमाज के सभी महत्त्वपूर्ण अधिकारियों तथा सक्रिय महिला पदाधिकारियों को क्षेत्रानुसार आगामी गोष्ठियों में साथ लाएं ताकि चर्चाएं तथा सूचनाएं समस्त आर्यजनता तक सरलता से पहुँचाई जा सके और गोष्ठी के उद्देश्यों को पूर्ण किया जा सके। इस गोष्ठी के उपरान्त अन्तिम गोष्ठी उन सभी आर्यसमाजों के लिए आयोजित की जाएगी, जो अभी तक किसी भी गोष्ठी में भाग नहीं ले सके हैं। यदि आप किसी कारणवश इस गोष्ठी में न पहुंच पाएं, तो अन्तिम गोष्ठी में अवश्य ही पहुंचने का प्रयास करें। गोष्ठी की तिथि, समय एवं स्थान की सूचना यथाशीघ्र प्रसारित की जाएगी। गोष्ठी के उपरान्त समस्त उपस्थित महानुभावों के लिए सुन्दर प्रीतिभोज की सुन्दर व्यवस्था आर्यसमाज की ओर से की गई है। कृपया अवश्य ही पहुंचकर सहयोग प्रदान करें। - ***महामन्त्री***

उत्तर पश्चिम दिल्ली गोष्ठी
आर्यसमाज प्रशान्त विहार, दिल्ली-110085
रविवार : 20 अगस्त, 2017
व्यवस्थापक :- श्री सुरेन्द्र आर्य जी ह्न

गोष्ठी समय एवं कार्यक्रम :

चाय/जलपान	प्रथम सत्र	चाय/नाश्ता :
दोपहर 2:30 बजे	सायं 3 से 5 बजे	सायं 5 बजे
द्वितीय सत्र :		**भोजन**
सायं 5:15 से 7:15 बजे		सायं 7:30 बजे

स्वतन्त्रता दिवस एवं जन्माष्टमी

आर्य समाज ताजगंज आगरा में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी एवं स्वतन्त्रता दिवस समारोह का आयोजन 15 अगस्त, 2017 को किया जा रहा है। इस अवसर पर श्री अर्जुनदेव स्नातक जी के प्रवचन होंगे।

-***राकेश तिवारी, मंत्री***

वृहद् वृष्टि यज्ञ व वार्षिकोत्सव

मगरा पूंजला स्थित आर्य समाज मंदिर, महर्षि पाणिनिनगर के तत्वावधान में आयोजित 16 से 23 जुलाई 2017 तक वृहद् वृष्टि यज्ञ व वार्षिकोत्सव सम्पन्न।

इस अवसर पर आचार्य सोमदेव जी अजमेर व बहन अंजली जी आर्या करनाल हरियाणा के सानिध्य में अथर्ववेद के वृष्टि

सूक्त मन्त्रों व आध्यात्मिक भजन प्रवचन के साथ सैकड़ों लोगों ने आहुति प्रदान की। मंच संचालन मन्त्री श्री शिवराम आर्य ने तथा प्रधान कैलाश चन्द्र आर्य ने सभी आगन्तुकों का धन्यवाद व आभार व्यक्त किया।

- ***गजेन्द्रसिंह आर्य, संयोजक***

आर्य समाज टमकोर का 104वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज टमकोर (राज.) का 104वां वार्षिकोत्सव 18 से 20 अगस्त के बीच मन्दिर प्रांगण में आयोजित किया जा रहा है। जिसमें स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती पिपराली, डॉ स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती, भजनोपदेशक पं. श्यामवीर राघव एवं योगिनी साध्वी पुष्पा शास्त्री जी पधारेंगे। कार्यक्रम अन्तर्गत नारी सशक्तिकरण सम्मेलन, कुरीति निवारण सम्मेलन, भजन एवं प्रवचन आयोजित किये जाएंगे। - ***मंत्री***

श्रावणी एवं स्वतन्त्रता दिवस

आर्यसमाज रोहिणी सैक्टर-7 का श्रावणी एवं स्वतन्त्रता दिवस समारोह 10-13 अगस्त तक मनाया जाएगा। इस अवसर पर भजन श्रीमती सन्तोष आर्या एवं प्रवचन डॉ. रचना विमल दुबे के होंगे। समापन एवं वेद सम्मेलन 13 अगस्त को होगा। - ***नरेश पाल आर्य, प्रधान***

कैंसर जांच शिविर सम्पन्न

आर्य समाज सै.-7 रोहिणी द्वारा इण्डियन कैंसर सोसाईटी के माध्यम से कैंसर जांच शिविर 23 जुलाई 2017 को आयोजित किया गया। शिविर में अनेकों महिलाओं व पुरुषों की विभिन्न प्रकार की जांच की गई। शिविर के आयोजन का मुख्य उद्देश्य समाज के सदस्यों को स्वस्थ रखना है। - ***संजीव गर्ग, मन्त्री***

बोध कथा

मनुष्य में पशुपन जाग उठा है

तैत्तिरीयोपनिषद् में एक कथा आती है- प्रजापति ने सृष्टि बनाई तो कुछ नियम भी बनाये। सबको कहा-''इन नियमों के अनुसार चलना होगा।''

पशुओं को दूसरे नियम तो समझ में नहीं आये। उन्हें सख्त भूख लग रही थी। उन्होंने प्रजापति के पास जाकर कहा-''महाराज! हम खायें क्या और दिन में कितनी बार?''

प्रजापति बोले-''तुम्हारे लिए खाने-पीने का कोई नियम नहीं; जब चाहो, खा सकते हो। तुम्हारे लिए दिन और रात, प्रात: और सायं का प्रतिबन्ध नहीं। तुम्हारी इच्छा हो तो 24 घण्टे खा सकते हो।''

मनुष्य भी पास ही खड़े थे। वे भी आगे बढ़े। हाथ जोड़कर कहा-''महाराज! पशुओं के लिए आपने बहुत अच्छी आज्ञा दी, परन्तु भूख तो हमें भी लगती है। हमारे लए क्या नियम है?''

प्रजापति बोले-'' तुम मनुष्य हो। तुम्हारे लिए यह नियम कि तुम दिन-रात में केवल दो बार खाओ।''

मनुष्य ने सोचा-'ये अच्छे प्रजापति हैं! पशुओं को तो चौबीसों घण्टे खाने की आज्ञा दे दी है, हमें केवल दो बार खाने को कहते हैं। हमसे तो पशु ही अच्छे हैं।'

ऐसा सोचकर वे चले आये। तभी से मनुष्य में बार-बार वह पशुपन जाग उठता है। आजकल भी जाग रहा है। प्रात: से सायं तक हमें खाने से ही अवकाश नहीं मिलता।

हर समय खाना और बहुत अधिक खाना मानवता नहीं है।

बोध कथाएं : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

शोक समाचार

श्री रामभूल सिंह जी का निधन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालयाध्यक्ष श्री अशोक कुमार जी के पूज्य मामाश्री श्री रामभूल सिंह (भूलेराम) का दिनांक 2 अगस्त, 2017 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार उसी दिन कादीपुर स्थित श्मशान घाट पर किया गया। वे लगभग 85 वर्ष के थे। वे अपने पीछे धर्मपत्नी श्रीमती शकुन्तला देवी एवं सुपुत्र श्री सुशील का भरा-पूरा छोड़कर गए हैं। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 6 अगस्त को सम्पन्न हुई।

डॉ. वी.एच. पटेल का निधन

टंकारा ट्रस्ट के ट्रस्टी डॉ. वी.एच. पटेल का 19 जुलाई 2017 को निधन हो गया। वे आर्यवीर दल भुज के आर्यवीर के रूप में वर्षों कार्य कर रहे थे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 7 अगस्त, 2017 से रविवार 13 अगस्त, 2017

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.एन.डी.)–11/6071/2015–2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 10/11 अगस्त, 2017

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0सी0) 139/2015–2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 9 अगस्त, 2017

पृष्ठ 4 का शेष

योगेश्वर श्रीकृष्ण का सत्य .....

नहीं दिखाया जाता है। यह रुक्मिणी के साथ पाप और अन्याय है। सच्चा इतिहास इसे कभी माफ नहीं करेगा। श्रीकृष्ण जैसे एक पत्नीव्रती, ज्ञानी, संयमी मर्यादापालक महापुरुष व्यभिचारी एवं परस्त्रीगामी कैसे हो सकते हैं। श्रीकृष्ण संसार के अद्वितीय महापुरुष थे।

आर्य समाज का उदय सत्य के प्रचार–प्रसार और वैदिक धर्म के पुनरुधार के लिए हुआ। महापुरुषों के उज्ज्वल, प्रेरक चारित्रिक, गरिमा की रक्षा का सदा पक्षधर रहा है। उसका नारा था जागते रहो। जागते रहो। स्वयं जागो और दूसरों को जगाओ। आज संसार जिस रूप में श्रीकृष्ण को मानता–जानता व समझता है, उस विकृत, कलंकित श्रीकृष्ण के स्वरूप को आर्य समाज नहीं मानता है। आर्य समाज उन्हें योगीराज महापुरुष के रूप में सम्मानित एवं प्रतिष्ठित करता है। वे दिव्य गुणों से युक्त महापुरुष थे उन्हें अपवादी ईश्वर नहीं मानता हूं। परमात्मा एक है अनेक नहीं, वह कण–कण में सर्वत्र विद्यमान है। वह व्यक्ति नहीं शक्ति है। वह सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान व सर्वान्तरयामी है। वह जन्म मृत्यु से परे है। गीता में स्वयं श्रीकृष्ण ने कहा है–

ईश्वरः सर्वभूतानां हृददेशेऽर्जुन तिष्ठति

वह परमेश्वर सब प्राणियों के हृदय में सदा निवास करता है। यदि हम श्रीकृष्ण को महापुरुष के रूप में जाने और मानेंगे तो उनसे जीवन जगत के लिए हम बहुत कुछ सीख, प्रेरणा व शिक्षा ले सकते हैं। वे हमारे रोल मॉडल बन सकते हैं। श्रीकृष्ण का सम्पूर्ण जीवन दर्शन, निराश, हताश उदास, परेशान, अशान्त किंर्त्तव्य विमूढ़, व्यक्ति को सदा हिम्मत, सहारा, आशा और आगे बढ़ने की रोशनी देता है। अधिकांश लोगों को यह भ्रान्ति अज्ञान और भूल है कि आर्य समाज किसी देवी–देवता, महापुरुष आदि को नहीं मानता है। सच ये है कि जितनी सच्चाई ईमानदारी श्रद्धाभक्ति से महापुरुषों के सत्यस्वरूप को आर्य समाज मानता जानता और बताता है उतना और कोई नहीं क्योंकि आर्य विचारधारा का आधार बुद्धि, तर्क व प्रमाण हैं। आर्य समाज कहता है चित्र का हम सम्मान करते हैं और चरित्र का अनुकरण करते हैं।

प्रतिवर्ष श्रीकृष्ण के जन्म को जन्माष्टमी के रूप में बड़ी धूमधाम से कृष्णलीला, रासलीला, झांकियां और तरह –तरह के कार्यक्रमों के रूप में मनाया जाता है। ग्लैमरस रास–रंग, रसीले श्रृंगारिक कार्यक्रम होते हैं। करोड़ों का बजट चकाचौंध में चला जाता है। जो श्रीकृष्ण के योगदान महत्त्व, जीवन दर्शन, गीता ज्ञान, शिक्षाओं उपदेशों आदि का चिन्तन– मनन होना चाहिए वह गौण होकर ओझल हो जाता है। मूल छूट जाता है। ऐसे महत्त्वपूर्ण एवं प्रेरक अवसरों पर महापुरुषों द्वारा दिए गए उपदेशों, सन्देशों, विचारों व ग्रन्थों पर चिन्तन– मनन व आचरण की शिक्षा लेनी चाहिए। जो महापुरुषों के जीवन चरित्रों के साथ काल्पनिक, चमत्कारिक और अतिशयोक्ति पूर्ण बातें जोड़ दी गई हैं जिन्हें लोग सत्य वचन महाराज और सिर नीचा करके स्वीकार कर रहे हैं उन व्यर्थ की मनगढ़न्त बातों पर परस्पर चर्चा करके भ्रांतियों और अन्जान को हटाना चाहिए तभी महापुरुषों को स्मरण करने तथा जन्मोत्सव मनाने की सार्थकता,उपयोगिता और व्यावहारिकता है। उस महामानव इतिहास पुरुष योगेश्वर श्रीकृष्णकी स्मृति को कोटि–कोटि प्रणाम।

– बी.जे.–29,
शालीमार बाग, दिल्ली–88

प्रतिष्ठा में,

जन्माष्टमी के अवसर पर वितरित करें

योगीराज श्रीकृष्ण का प्रेरक जीवन

भारत की विशेषता एवं आकर्षण रहा है कि इस देश को महापुरुषों एवं सद्ग्रन्थों की परम्परा व विरासत मिली है। जैसे ऋषि–मुनि,सन्त–तपस्वी, त्यागी,उपकारी महापुरुष और वेद, दर्शन, गीता, रामायण आदि ग्रन्थ इस देश को मिले हैं, वैसे अन्य देशों के पास नहीं है। महापुरुषों की लम्बी परम्परा में भगवान श्रीकृष्ण का नाम सम्पूर्ण मानव जाति बड़ी श्रद्धा, सम्मान, आदर एवं पूजनीय भाव से लेती है। अधिकांश लोग उनमें दैवीय गुण युक्त पूजा भाव रखते हैं। भगवान श्रीकृष्ण धर्मात्मा, पुण्यात्मा तपस्वी, त्यागी, योगी, वेदज्ञ, नीतिज्ञ, निरहंकारी, लोकोपकारी युग निर्माता आदि विशेषताओं से पूर्ण महापुरुष थे। उनके व्यक्तित्व, कृतित्व पर न जाने कितना लिखा–पढ़ा सुना और बोला गया है फिर भी उनका वास्तविक प्रामाणिक सत्य जीवन चरित आज हमारे से ओझल हो रहा है। यही उनके प्रति सबसे बड़ी त्रासदी एवं कृतघ्नता है। भारत का सम्पूर्ण धार्मिक, आध्यात्मिक, सांस्कृति पूजा पाठ, धर्म कर्मकाण्ड आदि दो महापुरुषों मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम और योगीराज भगवान श्रीकृष्ण पर टिका है। इन दोनों दिव्यात्माओं को अलग कर दिया जाय तो कुछ भी पौराणिक जगत के पास

प्राप्ति स्थान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली–110001
मो. 09540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह